रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन

लेखक

विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

प्रकाशक

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,

कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली-110053

दूरभाष एवं फेक्स-011-22914799

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❖ प्रकाशन दिवस : रवीन्द्रनाथ ठाकुर जयंती
वैशाख शुक्ल चतुर्थी, वि.सं. 2068, युगाब्द 5113
तद्नुसार 7 मई 2011

❖ सहयोग राशि : 20 रुपये

❖ अक्षर संयोजन :
सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर

❖ मुद्रक : **प्रीमियर प्रिंन्टिग प्रेस, जयपुर**

❖ प्रकाशक :
अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ

प्रकाशकीय

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 150वीं वर्षगांठ पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ 'गुरुदेव' के 'शिक्षा दर्शन' को आज के विभ्रम पूर्ण स्थिति में खड़े भारत के युवाओं के समक्ष रखकर भारत की गुलामी के समय के मध्य रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा विशेष व्यतीत जीवन से प्रेरणा पाकर प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन के आलोक में सम्पूर्ण जगत मूल्यपरक एवं अन्त:स के वैशिष्ठ्य को समझकर उसके महत्व को स्वीकारेगा।

आजादी के बाद भी भारत स्वयं मेकालययी शिक्षा व्यवस्था से मुक्त होने की छटपटाहट से ग्रस्त है। आज इसी सूत्र को पकड़कर प्रत्येक भारतवासी के पास गुरुदेव के 'भारतीय शिक्षा दर्शन' को लेकर जाने के संकल्पपूर्ति हेतु यह पुस्तक प्रकाशित करने की योजना बनी है। इसी उद्देश्य के लिए श्री विष्णु प्रसाद चतुर्वेदी (सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं वनस्पति विज्ञानी, बाल विषयक उपन्यासकार, विज्ञान विषयक लेखक) ने हमारे आग्रह को स्वीकार कर अत्यल्प समय में 'रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन' पुस्तक हमें उपलब्ध करा दी। हम उनके इस प्रयास से उत्साहित हैं, अभिभूत हैं तथा आगामी कार्य योजना में उसी प्रकार के सहयोग की कामना करते हुए साधुवाद देते हैं।

इस पुस्तक के आवरण पृष्ठ को आकल्पित करने तथा प्रभावी अक्षर संयोजन का कार्य सागर कम्प्यूटर्स, जयपुर ने किया है तथा प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस, जयपुर ने आकर्षक मुद्रण कर यह पुस्तक उपलब्ध करा दी। हम इन सभी के आभारी हैं।

सुधी पाठकों के हाथों में 'रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन' पुस्तक सौंपते हुए हमें हर्ष है तथा आशा है सभी को यह पुस्तक पसन्द आयेगी। भारत की गुलामी के समय रवीन्द्र बाबू के शिक्षा सम्बन्धी किये गये यथार्थ प्रयोगों की आज भी वैसी ही प्रासांगिकता है। ऐसे में वर्तमान पीढ़ी में इस प्रकार का थोड़ा भी भाव पैदा करने में समर्थ सिद्ध हो सके तो पुस्तक प्रकाशन की सार्थकता सिद्ध होगी।

– प्रकाशन समिति

लेखकीय निवेदन

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जीवन परिचय एवं शिक्षा पर उनके विचार का संक्षिप्त विवरण आपके सम्मुख प्रस्तुत करने के दायित्व का निर्वाह कर मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। संगठन द्वारा दायित्व दिए जाने से पूर्व, गुरुवर के विषय में, मेरा ज्ञान केवल तीन बातों तक सीमित था। वे एक कवि थे, उनकी कविता पुस्तक गीताजंली को नोबल पुरस्कार मिला तथा बच्चों को प्रकृति के सम्पर्क में शिक्षित करने हेतु उन्होंने शान्तिनिकेतन में एक विद्यालय प्रारम्भ किया था। पुस्तिका के लिए सामग्री जुटाने की दृष्टि से उनके विषय में पढ़ना प्रारम्भ किया तो डूबता चला गया। कोई ओर-छोर नजर नहीं आया। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ के विषय में पढ़ कर पुनर्जन्म की अवधारणा पुष्ट होती प्रतीत हुई है। जीव विज्ञान का विद्यार्थी होने के नाते पुनर्जन्म की अवधाररणा गले नहीं उतरती। स्वामी विवेकानन्द को पढ़ते हुए लगा था कि पुनर्जन्म को माने बिना उनके व्यक्तित्व को स्वीकारना सम्भव नहीं। रवीन्द्रनाथ रूपी महासागर की थाह पाना मेरे जैसे अल्पज्ञानी के लिए असम्भव था अतः शिक्षा के घाट पर खड़े रह कर कुछ खोजने का प्रयास किया है।

अपने संक्षिप्त अध्ययन से मैंने जाना है कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारत की वैदिक संस्कृति को ठीक से समझा तथा शिक्षा के माध्यम से उसकी पुनः स्थापना का प्रयास किया। शिक्षा का ऐसा प्रयोग अन्यत्र नहीं मिलता। रवि बाबू मूलतः कवि थे। स्कूल से उनका सम्बन्ध अच्छा नहीं रहा। परिवार में भी शिक्षण कार्य की कोई परम्परा नहीं थी। शिक्षा को व्यवसाय के रूप में अपनाना उनका उद्देश्य नहीं था। ऐसे में उनके द्वारा शिक्षा को अपना कर्मक्षेत्र बनाना एक बड़ी घटना मानी जानी चाहिए।

बचपन में तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था के विरोध में उनके मन में उपजे विद्रोह ने उनके मन में शिक्षा की वैकल्पिक व्यवस्था को जन्म दिया। रवीन्द्रनाथ की सबसे बड़ी विशेषता अपने सिद्धान्तों को कार्यरूप देने की रही। उन्होंने जो कहा वह करके दिखाया। रवीन्द्रनाथ शिक्षा की भारतीय अवधारणा को संपूर्ण मानवता के हित में मानते थे। समकालीन विश्व हस्तियों से हुए विचार विमर्श से यह बात स्पष्ट होती

है। प्रख्यात ब्रिटिश विचारक एच.जी.वेल्स ने गुरुदेव से चर्चा के दौरान न केवल मैकाले का मजाक उड़ाया अपितु तत्कालीन ब्रिटिश प्रशासन की निन्दा की। रवीन्द्रनाथ ठाकुर को आधुनिक भारत का महान शिक्षाविद् स्वीकारने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। इसे दुर्भाग्य ही कहेंगे कि देश के नीति निर्धारकों ने उनकी भूमिका को सही रूप में नहीं समझा। इसी का परिणाम है कि रवीन्द्रनाथ के समय की शिक्षा समस्याएं आज अधिक विकराल रूप में सामने खड़ी है। इनका समाधान गुरुदेव के प्रयासों से होकर ही जाता है। इलाहबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर राजेन्द्रसिंह जी को उनके शिक्षक द्वारा विषय को नहीं, छात्रों को पढ़ाने का परामर्श मेरी दृष्टि में रवीन्द्रनाथ की परम्परा को आगे बढ़ाने का आग्रह ही है। 151 वें वर्ष में रवीन्द्रनाथ ठाकुर को याद करने की सार्थकता इसी में है कि हम, विषय को नहीं, बच्चों को पढ़ाना प्रारम्भ करें। ऐसा होने पर शिक्षा की अधिकांश समस्याएं स्वत: ही समाप्त होने लग जाएगी।

मैं आभारी हूँ अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री माननीय महेन्द्र जी कपूर का, जिन्होंने मुझे 'गुरूदेव' को गहराई से पढ़ने के लिए प्रेरित किया, तथा जिला पुस्तकालय पाली (राज.) के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री प्रेमप्रकाश पारीक का जिन्होंने उचित साहित्य उपलब्ध करा कर कार्य को सरल बनाया।

विनीत

विष्णुप्रसाद चतुर्वेदी

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

विक्रमाब्द 2068

रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन

कई लोगों के जीवनवृत को पढ़ने पर यह विश्वास ही नहीं होता कि वे एक साधारण मनुष्य की तरह ही कभी हमारे बीच रहे थे। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा गुरुदेव की उपाधि से विभूषित रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक ऐसे ही व्यक्तित्व के धनी है। भारतीय संस्कृति के प्रतीक पुरुष रवीन्द्रनाथ ठाकुर की विश्व पहचान भले ही गीताजंलि के गायक के रूप में बनी हो मगर उनका यह परिचय समुद्र में तैरते हिमखण्ड जैसा ही सिद्ध होगा। पचास से अधिक कहानी संग्रह, बारह उपन्यास, तीस से अधिक नाटक, दो सौ से अधिक निबंध तथा दो हजार से अधिक कविताएं, भारत व बंगलादेश दो देशों के राष्ट्रगान के रचयिता होने व कविता पर नोबल पुरस्कार पाने के कारण रवीन्द्रनाथ को विश्व का एक महान साहित्यकार स्वीकारा जाता है। उनकी चित्रकला और संगीत भी मानवीय उत्कर्ष की कहानी कहते हैं।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का सर्वाधिक सबल पक्ष उनका शिक्षा दर्शन है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर अपने समय की शिक्षा व्यवस्था के प्रति नाराजगी प्रकट करने तक ही सीमित नहीं रहे अपितु उन्होंने शान्तिनिकेतन में वैकल्पिक शिक्षा के स्वरूप को प्रत्यक्ष कर दिखाया। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या कारण था कि रवीन्द्र बाबू ने शिक्षा प्रसार को सर्वाधिक महत्व दिया ? अपना सर्वस्व शिक्षा पर अर्पण कर दिया? रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी कमाई शिक्षा पर खर्च करने के साथ जीवन के 40 वर्ष भी शिक्षा को दिए। बचपन में जिनका स्कूल में तनिक भी मन नहीं लगा हो, जो कुछ वर्ष बाद ही स्कूल छोड़ घर बैठ गए हों, जिनके पास शिक्षण का कोई अनुभव व प्रशिक्षण नहीं हो, जिनका प्रथम लगाव कविता से हो, उन्हें स्कूल खोलने की क्यों सूझी? इन सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है बच्चों के प्रति उनका असीम प्रेम।

बच्चों को वे किस भाव से देखते हैं इसका खुलासा गीताजंलि पुस्तक की भूमिका से होता है। गीताजंलि के अंग्रेजी अनुवाद का प्रकाशन 1913 में मैकमिलन एण्ड कंपनी द्वारा किया गया था। इस पुस्तक की भूमिका महान अंग्रेजी कवि डब्लू.बी.यीट्स ने लिखी थी। लम्बी भूमिका के अन्त में यीट्स लिखता है कि रवीन्द्रनाथ बच्चों के विषय में बातें करते हैं तो निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि वह संतों के विषय में भी बात नहीं कर रहे हैं? एक कविता में रवीन्द्रनाथ कहते हैं – ''वे रेत के घरौंदे बनाते हैं और रिक्त